कार्यक्रम

'विश्व हिन्दी दिवस'

10 जनवरी, 2022

कार्यक्रम का नाम – 'विश्व में हिन्दी भाषा का प्रसार : खुली परिचर्चा'
आयोजन तिथि– 10 जनवरी, 2022
कार्यक्रम का उद्‌देश्य – विश्व स्तर पर हिन्दी के महत्व को रेखांकित करना

कार्यक्रम स्थल– निदेशक, मानविकी विद्याशाखा कक्ष

मुख्य वक्ता – प्रो. रुचि बाजपेई, आचार्य हिन्दी

आयोजक प्रो. सत्यपाल तिवारी, निदेशक, मानविकी विद्याशाखा

संचालक – डॉ. अतुल कुमार मिश्र, सहा. आचार्य, दर्शनशास्त्र

कार्यक्रम रिपोर्ट की विस्तृत रिपोर्ट संलग्न है।

विश्व में हिन्दी का प्रसार : खुली परिचर्चा

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर मानविकी विद्याशाखा द्वारा एक खुली परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस खुली परिचर्चा का विषय 'विश्व में हिन्दी भाषा का प्रसार' रहा परिचर्चा में विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने हिन्दी के महत्व को रेखांकित करते हुए विश्व में हिन्दी के बढ़ रहे प्रभाव पर चर्चा की कार्यक्रम की अध्यक्षता मानविकी विद्याशाखा के हिन्दी विषय की प्रोफेसर डॉ. रुचि बाजपेई जी ने की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अतुल कुमार मिश्रा ने किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रोफेसर रुचि बाजपेई कहा कि आज हिन्दी भाषा वैश्विक स्तर पर तीव्र गति से प्रसारित हो रही है। मॉरिशस, फिजी सहित अनेक देशों में हिन्दी को अधिकारिक रूप से स्वीकार किया जा चुका है। आज विश्व के कोने–कोने में हिन्दी भाषा को बोलने और समझने वाले लोग मिल जाते हैं। उन्होंने हिन्दी दिवस के अवसर पर सभी को बधाई देते हुए कहा कि हमारा विश्वविद्यालय हिन्दी के प्रसार का प्रमुख आधार स्तम्भ है। इसके पूर्व डॉ. अतुल कुमार मिश्र ने प्रोफेसर रुचि बाजपेई को हरित पौधा देकर सम्मानित किया गया ।

विश्व में हिन्दी भाषा का प्रसार विषय पर आयोजित खुली चर्चा की शुरूआत करते हुए डॉ. अतुल मिश्र ने कहा कि वैश्विक स्तर पर हिन्दी को ज्ञान की भाषा बनना होगा तभी वह अपने वास्तिविक गौरव को प्राप्त कर सकेगी। अभी हिन्दी संवाद की भाषा के तौर पर पूरी दुनिया में विस्तारित हो रही है। कोई भी भाषा जब तक ज्ञान की भाषा नहीं बनेगी तब तक उसका स्वाभाविक विकास नहीं हो पायेगा।

प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा के डॉ. ज्ञान प्रकाश यादव, एसो. प्रोफेसर ने प्रबन्धन के क्षेत्र में हिन्दी भाषा के बढ़ते प्रभाव रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में कार्यरत कर्मचारियों के मध्य संवाद की भाषा हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ रही है। वैश्विक स्तर पर आज हिन्दी बोलने एवं समझने वालों की संख्या तेजी से बढ़ी है। प्रबन्धन से जुड़ी मेरी दो पुस्तकें हिन्दी में ही हैं।

डॉ. स्मिता अग्रवाल ने कहा कि संस्कृत भाषा के बढ़ते महत्व के साथ हिन्दी भाषा का प्रसार स्वाभाविक रूप में हो रहा है। डॉ. अब्दुल रहमान ने कहा कि उर्दू और हिन्दी भाषा समवेत रूप में विदेशों की संवाद भाषा के रूप में विकसित हो चुकी है। डॉ. शिवेन्द्र प्रताप सिंह के अनुसार हिन्दी भाषा के व्यापक प्रसार ने भारत को वैश्विक शक्ति के तौर पर स्वीकार करने में अहम भूमिका निभाई है। डॉ. राजेश कुमार गौतम ने पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में

हिन्दी के बढ़ते हुए प्रयोग को रेखांकित किया। डॉ. अनिल कुमार यादव ने हिन्दी को विश्व की सर्वाधिक लोकप्रिय व सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा बनाने के प्रयासों पर बल दिया।

विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केन्द्र प्रयागराज के समन्वयक डॉ. अभिषेक सिंह ने भूगोल एवं पर्यावरण से सम्बन्धित पुस्तकों के हिन्दी में प्रकाशन को महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा हिन्दी दिवस पर करायी गयी निबन्ध प्रतियोगिता का मूल्यांकन करके परिणाम भी घोषित किये गये।

प्रथम – प्रियांशु दुबे द्वितीय – अभिषेक कुमार, तृतीय अनुराग एवं मधु सिंह, सांत्वना पुरस्कार कुसुम कुमारी, शिवानी अग्रवाल, धृति उपाध्याय को प्राप्त हुआ।

प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान एवं सांत्वना पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को मा. कुलपति जी द्वारा 11 जनवरी, 2023 को आयोजित जी–20 विषयक कार्यक्रम में पुरस्कृत किया जाऐगा।

मुक्त चिन्तन

News Letter

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

मुक्त चिन्तन 10 जनवरी, 2023

विश्व में हिन्दी का प्रसार : खुली परिचर्चा

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर मानविकी विद्याशाखा द्वारा एक खुली परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस खुली परिचर्चा का विषय 'विश्व में हिन्दी भाषा का प्रसार' रहा परिचर्चा में विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने हिन्दी के महत्व को रेखांकित करते हुए विश्व में हिन्दी के बढ़ रहे प्रभाव पर चर्चा की कार्यक्रम की अध्यक्षता मानविकी विद्याशाखा के हिन्दी विषय की प्रोफेसर डॉ. रुचि बाजपेई जी ने की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अतुल कुमार मिश्रा ने किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रोफेसर रुचि बाजपेई कहा कि आज हिन्दी भाषा वैश्विक स्तर पर तीव्र गति से प्रसारित हो रही है। मॉरिशस, फिजी सहित अनेक देशों में हिन्दी को अधिकारिक रूप से स्वीकार किया जा चुका है। आज विश्व के कोने–कोने में हिन्दी भाषा को बोलने और समझने वाले लोग मिल जाते हैं। उन्होंने हिन्दी दिवस के अवसर पर सभी को बधाई देते हुए कहा कि हमारा विश्वविद्यालय हिन्दी के प्रसार का प्रमुख आधार स्तम्भ है। इसके पूर्व डॉ. अतुल कुमार मिश्र ने प्रोफेसर रुचि बाजपेई को हरित पौधा देकर सम्मानित किया गया ।

विश्व में हिन्दी भाषा का प्रसार विषय पर आयोजित खुली चर्चा की शुरूआत करते हुए डॉ. अतुल मिश्र ने कहा कि वैश्विक स्तर पर हिन्दी को ज्ञान की भाषा बनना होगा तभी वह अपने वास्तिविक गौरव को प्राप्त कर सकेगी। अभी हिन्दी संवाद की भाषा के तौर पर पूरी दुनिया में विस्तारित हो रही है। कोई भी भाषा जब तक ज्ञान की भाषा नहीं बनेगी तब तक उसका स्वाभाविक विकास नहीं हो पायेगा।

प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा के डॉ. ज्ञान प्रकाश यादव, एसो. प्रोफेसर ने प्रबन्धन के क्षेत्र में हिन्दी भाषा के बढ़ते प्रभाव रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में कार्यरत कर्मचारियों के मध्य संवाद की भाषा हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ रही है। वैश्विक स्तर पर आज हिन्दी बोलने एवं समझने वालों की संख्या तेजी से बढ़ी है। प्रबन्धन से जुड़ी मेरी दो पुस्तकें हिन्दी में ही हैं।

डॉ. स्मिता अग्रवाल ने कहा कि संस्कृत भाषा के बढ़ते महत्व के साथ हिन्दी भाषा का प्रसार स्वाभाविक रूप में हो रहा है। डॉ. अब्दुल रहमान ने कहा कि उर्दू और हिन्दी भाषा समवेत रूप में विदेशों की संवाद भाषा के रूप में विकसित हो चुकी है। डॉ. शिवेन्द्र प्रताप सिंह के अनुसार हिन्दी भाषा के व्यापक प्रसार ने भारत को वैश्विक शक्ति के तौर पर स्वीकार करने में अहम भूमिका निभाई है। डॉ. राजेश कुमार गौतम ने पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी के बढ़ते हुए प्रयोग को रेखांकित किया। डॉ. अनिल कुमार यादव ने हिन्दी को विश्व की सर्वाधिक लोकप्रिय व सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा बनाने के प्रयासों पर बल दिया।

विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केन्द्र प्रयागराज के समन्वयक डॉ. अभिषेक सिंह ने भूगोल एवं पर्यावरण से सम्बन्धित पुस्तकों के हिन्दी में प्रकाशन को महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा हिन्दी दिवस पर करायी गयी निबन्ध प्रतियोगिता का मूल्यांकन करके परिणाम भी घोषित किये गये। प्रथम – प्रियांशु दुबे द्वितीय – अभिषेक कुमार, तृतीय अनुराग एवं मधु सिंह, सांत्वना पुरस्कार कुसुम कुमारी, शिवानी अग्रवाल, धृति उपाध्याय को प्राप्त हुआ। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान एवं सांत्वना पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को मा. कुलपति जी द्वारा 11 जनवरी, 2023 को आयोजित जी–20 विषयक कार्यक्रम में पुरस्कृत किया जाऐगा।